

~~২৩/৩০~~ নির্বাচনসভা উচ্চতম নির্বাচন

নাম : উৎপন্ন রামগোপ্তা

জন্ম : একাধারে কল্পনা

ঠাল : ০৬

প্রিয়েশন সেইন্স ১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২  
১/১/২২

লাইট বরষ্ণনাব জীবনী

জন্ম ২/১/২২

আপনুরি :

লাইট বরষ্ণনাব আসন্নীশ্বাষ অঠা অতি পরিচিত গান্ধীবাদী  
কৌশ বীর আৰু সাধারণামূলক অসমীয়া মুক্তিশাস্ত্র নিবৃত্ত নাম স্বামৈ  
আধুনিক লিঙ্গ প্রার্থন সম্বৰ্থ রথে। অজন বীৰ পুষ্প অসমীয়া  
লাইট বরষ্ণনাব, বীৰ বুলি কালৰ কান্দল অমুমাতৰ অশা গান্ধীবাদীকে  
ইঞ্জ লাইট বরষ্ণনাব, অসমীয়া আৰণ্য পিতৃক সমালো অধিকাৰ  
কীৰ্তি আৰু লাইট বরষ্ণনাব বীৰপুৰ্ব, খচিন অসমীয়া বীৰসকলৰ  
মিলত আজীবিতি সাধারণী বীৰজনী লাইট বীৰপুৰ্ব, সহ সহজ অসমীয়া  
সহজ অসমীয়া দৈনিকীত রক্ষণ শার্তলৈ রমাবু ডেণ্ডাম  
ইঞ্জিল নিষেক কৰি সহজ অসমীয়া অসমীয়া রপ্তা বাজাৰ হাত লাইট বরষ্ণনাব  
কীৰ্তি পালি ছথন কীৰ্তি, অসমীয়া নিষেক নিষেক কীৰ্তি কীৰ্তি  
কীৰ্তি ক'ৰ সাৰা পঞ্জিজনী ইঞ্জ লাইট বরষ্ণনাব অসমীয়া পিতৃক লিঙ্গ  
জীবনী মানিকু পৰিপৰা অসমীয়া অসমীয়া রক্ষণ রক্ষণ - রক্ষণ মজীয় বা  
মানিকু লাইট বরষ্ণনাব,

কানা বধন সহার্জল পিষ্টা পিষ্টপুৰ্বাৰ্থ পুষ্পজ্ঞী পুষ্পজ্ঞী  
নিষেক অনিন পিষ্ট পুজানুণি লাভিবজ্ঞ, অসমীয়া মুক্তিশাস্ত্র পুষ্পজ্ঞ  
ধীৰ্ঘাব্দ দণ বৈশ্ব ধীৰ্ঘাব্দলৈ চিল গুৱাপুৰ্ব পুৰ্ব সহজ ধীৰ্ঘাব্দ  
এন পুষ্পজ্ঞ অনিন্দিল সহজ ইঞ্জিল কুজন জন্ম বীৰ লাইট  
বরষ্ণনাব, লাইট বরষ্ণনাব অসমীয়া সন, অসমীয়া জনজন  
নিষেক স্বালোবা ক'ল অসমীয়া পুৰীবীৰজা সৃষ্টি রক্ষণ পুৰীবীৰজা স্মাৰ  
কালখেজন সময় লাইট কান্দল আম্বাল কান্দল আৰু পৰজা সাধারণ  
পুৰীবীৰজ সামন আৰু সংগ্ৰামৰ প্রতীক।

অন্ত : বীৰ লাইট বরষ্ণনাব জন্ম ইঞ্জিল ১৯২২ ধীৰ্ঘাব্দ ২৪

বৰষ্ণনাব জীৱিত, ইউঁৰ লিঙ্গ অনিল আশান বাজাৰ পুঁজীজন

वर्षणदाना - तभा सार्वक लग्नाव चुपचार रक्षामार्ग आशूली चर्षणदाना  
लीचि७ चर्षणदान आजिल रक्षामार्ग आशूली चर्षणदान समुस तभा  
चुपचार जीवित सनुत । लीचि७ चर्षणदान आजिल लुधुबाधव क्षेपण  
लोन - दिसा चृणार त्वाक । अर्थ ईक्षेप आदि प्रवृत्तिशाल चुलाहाव  
लगात असर्वाल आर्थिजिल ।

किंकुका :-

लीचि७ चर्षणदान लणीलजालाव रावर्ग आजिल आउ नाथनी,  
सर्वात, कर्त्तव्य निर्धा॒, निश्चान्तुतिर्ग आव घाव्यादिताव पाव  
तुवाणाव लीचि७ सम हि मिताक रक्षामार्ग आशूलीव चला आवत्त  
कीविजिल ।

लीचि७ आविकुडा वा खामोहिका किंकुका लाव कीविजिल  
विज डृगात्त । मितु रक्षामार्ग आशूली चर्षणदान राव चुपचार  
आजिल लीचि७ राव वधव निप्पालन्त्र दाव । चर्षणदान चुपचार  
प्रवृत्तिश बाजिनिति कुट्टिनिति, अम्बिनिति, नाम्मिति आलाचवाप  
राव लीचि७ गावर्ग किंकुका आवत्त आर्थिजिल । नारापाति औं  
इम्मुआ किंकुकावा विक्षाता कीविजिल । आरथामकाष्ठ नित्युक्तिनी,  
अवंकाष्ठ आदिव चिक्षाव ताव अर्गन कराव उपाति रद्धाव दुष्टुवि  
आव जास्तनाव सकातिस्त झाका लाव कीविजिल । ईम्माव समाकुडालव  
छाव औं निर्व अप्पुत्तलनाव लगात अन्याना सामिति किंकुकाउ  
इत्तन कीविजिल आव रक्षामार्ग सकाला रुक्तवात पांडु हि ईर्पिजिल ।  
वर्षणदान चर्षणदान एव निर्जाव एडोर्पेड्ड रवज्वालिउ लीचि७व  
सद्धन आ॒-आ॒ आजिल । ईम्माव कल बाजमदाव आदव जाप्पामकुट्टि  
औं अति रसानकालू निकिमिजिल ।

बाजिनिति जगात्त दोळना :-

लीचि७ बाकीपनार्ग आथाम बाजाव चर्षणदान  
एपवीष अविष्ट रथाव नीजिल । यु रु रु तभा अंगिवमान्त  
यल्ल औं आथाम बाजाव चर्षणदान तभा एव्याव नमनापाति  
सा अंगिकाव कीविजिल । लीचि७ लग्नाव सर्वमग्न बाजम्मवि ।  
ताव बीमाव शोक्ति रुग्गा आशूलीव राप निमुक्ति लाव कीविजिल अर्थ  
सपटा वाग्गिकात सभासकव राम्भव द्वील जना मास + बाजम्मवि लगाउ  
औं बजाव दाव चक्कीव रोक्कात उपमिकुउ गाफित नीमिजिल वर्टाग्गविइ  
आजिल आथाम बाजाव बाजिनिति लीचि७व लग्नाव एव्याव अविष्ट लीचि७व

राजस्थान उच्चित्र अधिकारी कार्यालय, आगुरा टीकिल.

रघुवर नदी द्वारा:

आजमन्त्रीव, शत्रुघ्नी, आगुलीष राजार्जु लालित  
राघवराज द्वारा निमूडि द्वारा कीविजल, लालित माईकदाह  
सागरमध्ये उत्तरर्धान लिजल, निज काम्बलाल लालित आलमगान  
पुरांडर द्वारा देव कीवि निज उत्तरर्धान साधित्व पांडि लिविजल  
आशान पूर्णपट्ट लालित द्वारा आठ पुलिया राजद्वा  
रापवीर निमूडि निपीजल, आठ दाजत निंगलुकुंडिया राजद्वा उत्तरान  
निमूडि निजाप निंगलुकुंडिया द्वारा देव निमूडि निमूडि लालित कीविजल,  
निमूडि पन्हर दाजार्जु लालित राजाकाहीया राजद्वा देव निमूडि लालित कार्य  
राजाकाम्बलीया राजद्वा उत्तरर्धान उत्तरर्धान द्वारा देव निमूडि  
मकलक निमूडि कार्य, तुँडुक देव देव निमूडि निज उत्तरर्धान  
सुमदलाप दालन कीविजल, तुँडुक माईक निमूडि पूर्णपट्टरे अजन  
माया रमापीति राजानाम आविजल, पूर्णपट्ट लालित राजद्वा देव  
दाल दार्ज रघुवर कीविजल, रमाकलक द्वारा राजद्वा राजद्वा राजद्वा  
आनन दागीया निमैलुहाव अनुष्ठ लालित राजापीति दालि रघुवर  
कीविजल, तुँडुक एकदल रघुवर देव निमूडि तुपाडोर्हा, राजद्वा राजद्वा  
आपि कीवि राजाना राजनीति निमैलुहाव अपर्व रमापीति दालि राजद्वा  
राजद्वा उत्तरर्धान देव निमैलुहाव आज्ञान. निमैलि.

वीठ कांवा :

रघुवर द्वारा अविकृष्ट शिखर लालित राजद्वा देव  
मंदासन उत्तरर्ध निपीजल, १७५८ श्रीरामायण देव १७७९ श्रीरामायणाक  
प्रेर उत्तरर्ध काम्बलीया लालित देव आठ नेतृत्व एकृत  
जीविधन उत्तरर्ध कार्य, राजन देव मन्महीनाव राजद्वा राजद्वा  
निमूडि देव अजन राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा  
राजद्वा उलिति राजद्वा राजद्वा निपीजल, राजद्वा मन्महीनाव लालित राजद्वा  
आशान राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा.

मुख्य राजद्वा लालित राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा  
उत्तरर्ध कार्य अमि समाधान राजी आविजल, १७५८ राजद्वा राजद्वा राजद्वा  
आज्ञानिष्ठान देव अविकृष्ट उत्तरर्ध राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा राजद्वा

— अधिकार पीडीएल, नियमनामूलक तर्फे अधिकार एकाल स्पॉटफॉर्ड द्वा  
रा बजाए रहे अधिजल, एक बाह्याभ वारे लोगों का विशेष कीवर्गल  
लाईट बुझावारे करते नीजल, ऐसे सभाला बुझावा एप्लिकेशन  
वारे आम्हां दीडीजल लाईट बाबीमिंग्ड लगाउ बुझाव मुद्रा जागतार  
कीविजल, ऐसे निवारिनीक आवश्यकित दावर्त जिळाव आण  
उद्धीपना एधुडाईजल, मात्र वारे ईमेल गालावल चृष्टि लाईजल.  
आनंदार्थ भाग नियंत्रणां आकाश एकाल ऐसे लाकाव रम खणजाय  
अनिवार्य तर्फे करा दिलेस्वर नियार्वल एवं कीविजल, ऐसे लाकाव  
मावृत आठव्हक बुझा कीवर्गल मध्य लागावार्दि चृष्टि कीविजल.

बजाए बाबीमिंग्ड निवा एवं बुजार्वल लाईटर्ल  
एडिगालाला आधुनिकी एडील आवे एडिआउल एडिगालाला आधुनिकी  
स्कूल लागाल आवे एडिआउल लाईट बुझा वाले आवे एडाव  
लागा लागाल, निवारना आधुनिकी एडी नियिल आवी द्वे घार  
किन्तु वाले नियिप नाववि आवे नियिप नावावि, आवाज  
निवारिनीकी बाबीमिंग्ड ईमेल एवं मुद्रा नावाव आवे चृष्टि  
मध्यार्थ चावर वावावि, असधीक्षा निवा अवाव - अवाव.

— आकी बजाए बाबीमिंग्ड निवा मुद्रा एवं नियार्वल  
— आविष्कर वारे लाईजल — आवाजुन जनाल किन्तु लाईट ऐसे  
ज्ञानावान जावावाव आणि उत्तम दिल आवे बाबीमिंग्ड मुद्रा मणामू  
कल्पकित मध्यार्थ वारे मुद्राईजीव नियाव बुझा एकाल एधुडाव  
जावार्थ आवल.

— ज्ञाल ईमेल वाकी नियम वारे बाह्यामुवर उत्तम  
आवे पीडीएल वारे दावं नियंत्रणाको वाले इड नियार्वाव क्षाव वावा  
द्वे एकाविष्कर नियाव इड नियार्वाव वाले उत्तमाव वारे  
लाईट राहावावका वारे वाहाव एमिल नियिल, किन्तु राहाव  
वर्णिलाल राहावाव जावे नियाव बुझा एवं राहावावका नियार्वाव  
कीविजल, लाईट धूम-प्रधान आवुच्यवाव वाले ओडेल काम वाले  
वाले चृष्टिवार्ड इकू वाकी अळ्का वाले जास कीविला, निव  
एमिल मुठावाव वालन लीवर्गल एवं उत्तम अवाव  
वाले राहावा वाकावा अता कीवर्गल एकाविष्कर विव बुझावाव  
वाले नीजल, आवे एव्हाव निवा राहावाव वाले इड वाले

पाजावा रात्रि तरन आजिउ निविड़िमार्हे रुक्मणी । रकाता रकाता ईच्छासमिपत रात्रि आजिउ उदाशीषीष मीठिचा दाष्टुत एवं डाढ़ निलिलि आज । अवार लाठि रष्ट्रकूकन तान नीषिमार्ह सोविजिल आण रानकुदा एवं सुमागावे आपाहुत आजिल कामपक्कु लाठि निषिमा लगात रागाळ सवार रुक्मणील तुमाले ठारिजिल आण मुळा कीषिर्वल आजवारी आगिजिल ।

~~एलडमी रागाळ सवार रुक्मणी दाढ़िमुख्ये लाठि रष्ट्रकूकन रवृद्धीरीन आमगीमा सवार रुक्मणीआप रामा प्पीकूप कीषि रुक्मणी । दुन अपृथ्वं सवा दावज रकाता ठारित पद्म नार्ह दुलि अकूमा कीषि रुक्मणी ।~~

बृहा :→

आवार्द्धार्थ मुळा जम्ह निषार्ह लाठि रुक्मणी रुक्मणील । मुळा समग्र रुक्मणी खात्र तुष्ट तुष्टी आगिजिल आण रुक्मणीमा पद्मेत र्वा मुळा कीषिजिल । रुक्मणी रुक्मणी रागाळ साबद निषमा अ । उपस्थितिज लिंगर्ह लाठि रुक्मणी निषमावे काव ।

सामग्री :→

लाठि रष्ट्रकूकन रुक्मणी तुल निषु अमित राज अपृथ्व वीषि रुक्मणी । रुक्मणी वीषि रुक्मणी आण सामग्र अपर्णामाव निषमा वारिनीर नाज निषुली सक्काव कीषि नावारल घर्वर्द आगिजिल गो वार्द जावार्द निषमा मुळा आमगीमा सवा निषमी रुक्मणील । लाठि रष्ट्रकूकन वीषि रुक्मणी निषुकाल आमगीमाक अनुसारित कीषिर । लाठि रष्ट्रकूकन वीषि दिषु जावे सकाल समावित कीषिजिल आमगीमा महार्ह अप्पासवीम । अद्वैत रुक्मणी रुक्मणीला मुळा नाहीति सुचवा कीषिजिल आण वृष्ट बनवीजित रुक्मणी व्यव व्यापक द्विकाल रागार्हीजिल । उत्तरावेष्ट अजन्मीलर्वा आपर्ण रुक्मणी लाठि रष्ट्रकूकन आण रुक्मणी रुक्मणीप्रवास । नाशवीष लाठि रष्ट्रकूकन रुक्मणी कीषिर्वल राष्ट्र रुक्मणी रुक्मणी १९९९ चूर्च अवा रुक्मिवज्ञ लाभज बाब्पीम अतिरुक्मणी प्रकारगीर रुक्मणी ।

କୋର୍ଟିଜନା ଲୋଟିତ ଚବ୍ଦୀକର ମୂଳର ସାଥେ ପ୍ରାପନ କରି ଆଶିଷା ।

କାହା ରାଜ୍ୟ ପ୍ରାଧାନ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ରଥାବୀ

ଲୋଟିତ ଚବ୍ଦୀକର ପାଠ ଅଳେ ଯୁଗାବୀକାଳ ଦାଖି ଜାଗାପିଲଙ୍ଗ ଜାଗମ  
ଆବୁ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ନିର୍ମାଣ ସାଧାରଣ ଯୁଗର କରି ଆଶି ଆଶମୀଶା ଜାଗିବ  
ଆପିତ୍ତ ରାଜ୍ୟ ବାଦିରଳ ଅନ୍ତର୍ମାଧ୍ୟମାନୀ କରିବା ଲାଭିବ ।  
ଅଭିଭାବ ଲୋଟିତ ଚବ୍ଦୀକର ଯୁଗର ଏକ ଅକ୍ଷୀ ଭାବାବ କରା  
ଏ ଆବୁ ଆଶମୀଶା ଜାଗିବ ଆପିତ୍ତ ରାଜ୍ୟ ରାଜ୍ୟ ରାଜ୍ୟ ।

X